# झुन्ड को पड़ोसियों और एक दूसरे की सेवा के लिये आयोजित करो

परमेश्वर के लोगों का निरक्षिण बुद्धिमानी से करें जैसा याकूब ने यरूशलेम में किया।

जो बच्चों को सिखाते हैं वे अध्ययन ओ 1 बी पढ़ें।

1. **अपने हृदय को परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के साथ तैयार करें**

1 कुरिन्थि 12-14 अध्यायों में खोजें कि आत्मिक वरदानो को कैसे इस्तेमाल करें:

- परमेश्वर किसकी भलाई के लिये आत्मिक वरदान देता है *[1 कुरिन्थि 12:4-7]*
- कौन निर्णय करता कि कौनसा वरदान विश्वासी प्राप्त करता है *[1 कुरिन्थि 12:8-11]*
- वरदान और उसका इस्तेमाल किसके साथ तुलना की जाती है *[1 कुरिन्थि 12:12-31]*
- हमारे वरदानो के इस्तेमाल का सही उद्देश्य *[1 कुरिन्थि 12:31;13:1-13]*
- एक वरदान पर अधिक जोर को कैसे सुधारें *[अध्याय 14]*

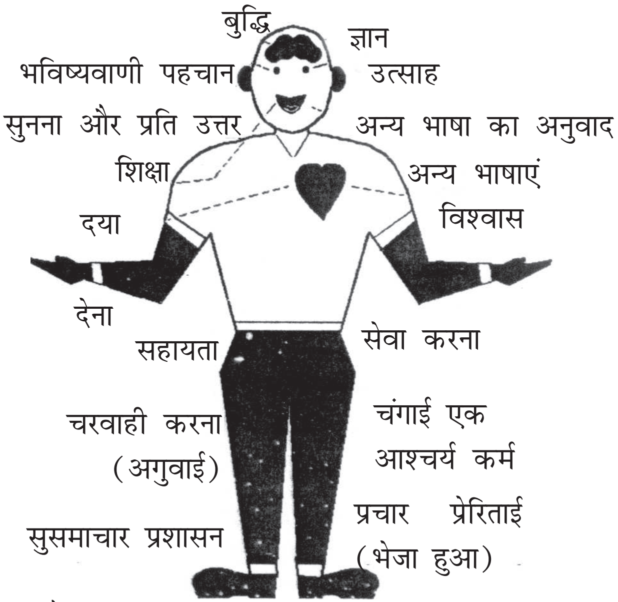


परमेश्वर विश्वासियों को विभिन्न वरदान देता है बहुत एक से अधिक जिससे हम अपने पड़ोसियों और एक दूसरे की सेवा करें।

- पवित्र आत्मा हमारे विभिन्न कार्यों को प्रेम में मित्र भाव पैदा करता है जैसे देह के अंग साथ काम करते हैं।
- रोमियो 12:4-8 1 कुरिन्थि 12 और इफिसियों 4:11-16 बहुत से वरदानो की सूचि बनाते हैं।

**बुद्धिमान निरीक्षक विश्वासियों को ये कार्य करने के लिये आयोजित करते हैं।**
**जो परमेश्वर हर झुन्ड से अपेक्षा करता है:**

- लोग जो पीड़ित हैं उनकी सेवा करना (मत्ती 25:31-46) और उनके लिये प्रार्थना करना (यूहन्ना 16:24) प्रार्थना का कार्य बोझ की प्रार्थना और शैतान के विरूद्ध यूद्ध है। हृदय के दो आधे भाग तरस के वरदान को बताता है (रोमी 12:8) और विश्वास (1 कुरिन्थि 12:9) जब ये दोनों वरदान विश्वास में साथ काम करते है तो हमारा उद्धार भले कार्यो को पैदा करता है (इफिसि 2:8-10) यीशु ने बहुतों को जिन्हें विश्वास था चंगा किया जिसमें एक कोढ़ी और सूबेदार शामिल थे (मत्ती 8:1-13) बहुत से पुराने नियम के विश्वासियों ने अपने कामों के द्वारा विश्वास दिखाया (इब्रानी11)
- मसीह में बढ़ने के लिये दूसरों की प्रशांसा और सहायता करें (कुलुस्यिों 1:28) दिमाग का 2 आधा हिस्सा हमें ज्ञान और बुद्धि के वरदानों का स्मरण दिलाता है (1 कुरिन्थि 12:8) सुलोमान उदाहरण है (1 राजा 3:5-28)
- लोगों को तसल्ली दो (2 कुरिन्थि 1:3-7) और आत्मिक समस्याओं को पहचानना (1 कुरिन्थि 2:14) दो आँखें भविष्यवाणियों के वरदान को प्रगट करती हैं (जो विशेष रूप से तसल्ली और शक्ति के लिये सेवा करती हैं 1 कुरिन्थि 14:2-3) और आत्माओं की पहचान करने (1 कुरिन्थि 12:10)यशायाह दोनो का उदाहरण है (यशायाह 40:1-14)

- विश्वासियों को तैयार करो कि वे अपने झुन्ड को बढ़ायें और अगुवों को प्रशिक्षित करें (इफिसियों 4:11-12) मुंह का मतलब है सिखाने का वरदान (1 कुरिन्थि 12:28) एज्रा उदाहरण है (नहेमिय्याह 8) पौलुस भी (2 तिमोथी 2:2)
- विदेशी अविश्वासायों को उनकी भाषा बोलकर आश्वस्त करें (1 कुरिन्थि 14:22) जबान का मतलब है अन्यभाषा का वरदान (1 कुरिन्थि 12:10) प्रेरितों ने पेन्तिकोस्त के दिन एसा किया (प्रेरित 2:1-18)
- विश्वासियों और उनके अगुवों को विश्वास में दृढ़ रखें और परमेश्वर द्वारा दिये गये कार्य करते रहें (1 कुरिन्थि 14:26; प्रेरित 14:21-22) दो कान प्रगट करते हैं प्रोत्साहित करने का वरदान (लोगों को बढ़ाने और उनकी सेवा करने के लिये उनकी सुने रोमियों 12:8) भाषा का अनुवाद करना (1 कुरिन्थि 12:10) पौलुस ने इफिसि के प्राचीनो को प्रोत्साहित किया (प्रेरित 20:17-38)
- मसीह की देह की सेवा करना और दूसरों की आवश्यकता पर चिन्ता करना (गलतियों 5:13, 6:10) दो बांहें सेवा करने के वरदान को प्रगट करती हैं (रोमियो 12:7) और सहायता करना (1 कुरिन्थि 12:28) यरूशलेम में प्रथम डींकनो ने विधवाओं की सेवा की (प्रेरित 6:1-6)
- बिमारों को चंगा करना (लूका 10:9) और देना (लूका 6:38) दो हाथ चंगा करने और आश्चर्य कर्म वरदान की याद दिलाते हैं (1 कुरिन्थि 12:9-10) और देना (रोमी 12:8) पौलुस ने पबलियुस के पिता को चंगा किया (प्रेरित 28:7-8) और देबोरा ने उदारता से दिया (प्रेरित 9:36)
- ऐसी अगुवाई करो कि दूसरे अनुसरण करें (1 कुरिन्थि 11:1) दो पांव अगुवाई के वरदान को प्रगट करते हैं (रोमियों 12:8) और प्रशासन (1 कुरिन्थि 12:28)दाऊद ने दोनो किया (1 सामुएल 23:1-5; 2 सामुएल 5)
- मसीह की घोषणा करना (लूका 24:46-48; प्रेरित 1:8) दो पांव प्रेरिताई बताते हैं (मिशनरी) और सुसमाचार प्रचार (इफिसियों 4:11-12) पौलुस दोनो का उदाहरण है (रोमियों 15:20-21)

**पढ़ें प्रेरित 15:1-31** देखें कि कैसे याकूब और विभिन्न कलीसियाओं के प्राचीनों ने (यहूदी और गैर यहूदी) धर्मिक व्यवहारों की गम्भीर समस्या सुलझाई जिससे मित्र भाव से कार्य कर सकें। याकूब यरूशलेम में माना हुआ प्रतिष्ठित चरवाहा था जबकि वहाँ यरूशलेम में कलीसियाओं में दो बड़ी संस्कृतियां थी।

**पृष्ठ भूमिः** यहूदियों ने सदियों से पुराने नियम की व्यवस्था को अपना रखा था जिसमें जानवरों के बलिदान की आवश्यकता थी यदि भाई मर गया और कोई सन्तान नहीं तो उसके पत्नी से ब्याह करना व्यक्ति जो शनिवार को कुछ कार्य करे तो उन्हें मार डालता केवल यरूशलेम ही में आराधना करना और बहुत से विस्तार से नियम थे।

- अधिकतर अन्यजाति (गैर यहूदी) विश्वासी उन प्राचीन इस्राएलियों की व्यवस्था के बारे में कुछ नहीं जानते थे। यहाँ तक कि आज भी कुछ विश्वासी पुरानी व्यवस्था को पवित्र आत्मा को उनकी अगुवाई की अपेक्षा नई वाचा को ले आते हैं।
- यीशु ने कहा कि अब हम परमेश्वर की व्यवस्था को उससे केवल प्रेम कर और अपने पड़ोसी से प्रेम कर पूरा करते हैं जैसा हमें करना चाहिये (मत्ती 22:33-40 रोमियों 13:8-10) प्रेम पवित्र आत्मा का फल है (गलतियों 2:22) ये सीखना कि किस प्रकार परमेश्वर ने पुरानी वाचा को बदल दिया पढ़ें 2 कुरिन्थि 3:6-18 और इब्रानी 8:6-13।

प्रेरित अध्याय 15 में खोजें:

- कुछ यहूदी विश्वासी क्या कुछ विचार करते हैं कि उद्धार पाने के लिये क्या करना है *[उत्तर देखें प्रेरित 15:1]*
- कौन सी व्यवस्था विश्वास करने वाले फरीसी (कट्टर यहूदी पंत) गैर यहूदियों पर लागू करना चाहते थे कि वे उसकी आज्ञा पालन करें *[देखें प्रेरित 15:2-5 पुराने नियम की व्यवस्था प्राचीन इस्राएलियों के लिये थी नये नियम के लिये नहीं]*
- पतरस की सलाह *[देखें प्रेरित 15:6-11]*
- किन लोगों के बीच पौलुस और बरनबास ने परमेश्वर के आश्चर्य जनक कार्य देखें *[प्रेरित 15:12 देखें]*
- याकूब जिसने समस्या का समाधान किया क्या उसने सुझाया *[देखें प्रेरित 15:13-21]*
- परिणाम *[देखें प्रेरित 15:22-31]*

**2. सप्ताह के बीच करने वाली गतिविधियों की योजना अपने सहकर्मियों के साथ बनायें।**

वे विश्वासी जो अभी तक दूसरों की सेवा नहीं करते उनके घर जाओ और उन्हें ऐसा करने में सहायता करो ऊपर दिये गये में से कोई भी काम आरम्भ करें जिसकी झुन्ड में कमी थी।

**3. हाल की आवश्यकताओं की पूर्ती के लिये आने वाली आराधना के समय की योजना अपने सहकर्मियों के साथ बनायें।**

वे कार्य जो परमेश्वर चाहता है कि हम करें उनका वर्णन करें और साथ के वरदानों की भी।

वर्णन करें कि किस प्रकार याकूब दूसरों ने विश्वासियों के बीच सामंजस्य (मित्र-भाव) बनाये रखा। ऊपर की सूचि के प्रश्न पूछें।

बच्चों ने जो तैयार किया है उन्हें प्रस्तुत करने दें।

प्रभु भोज का परिचय करते समय यूहन्ना 17:18-24 पढ़ें। वर्णन करें कि यीशु ने जब प्रभु भोज दिया हमारी एकता के लिये प्रार्थना की।

आत्मिक वरदानो के विषय बात करने के लिये 2 या 3 के झुन्ड में मिलें एक दूसरे के लिये योजना बनायें और प्रार्थना करें।

इफिसियों 4:14-17 साथ मिलकर कंठस्त करें।

**प्रार्थना** "प्रभु सहायता कर कि हम अपने वरदानों पर घमन्ड ना करें और दूसरों के वरदानो का सम्मान करें"